Universe Journal of Education & Humanities ISSN 2348-3067
Volume-I, No. I, April-2014, pp.84-86

अध्यापक शिक्षा में गुणवत्ता प्रमुख कारकः प्रतिबद्धता

डॉ0 नवनीत कुमार सिंह , डॉ0 सतवीर सिंह चौधरी
प्रवक्ता, शिक्षाविभाग,
डी0ए0वी0 कॉलेज खरखौदा, मेरठ उत्तर प्रदेश भारत।

शिक्षा, मनुष्य के ज्ञान को समृद्ध करने और उसके सशक्तीकरण की वह प्रक्रिया है, जिसके माध्यम से बेहतर व उच्च जीवन स्तर प्राप्त किया जा सकता है। शिक्षा की सुदृढ व प्रभावशाली प्रणाली के फलस्वरूप सीखने वालो की अन्तः शक्तियाँ विकसित होती हैं। उनकी क्षमताओं में अभिवृद्धि होती है और उनकी अभिरूचियों, प्रवृत्तियों व मूल्यों का रूपान्तरण होता है। यही कारण है कि व्यक्ति, समाज व देश के विकास में विद्यालय शिक्षा की गुणवत्ता व सक्षमता का विशेष महत्व है।

इस संदर्भ में देखें तो प्रभावी अध्यापक शिक्षा की भूमिका अत्याधिक अहमियत रखती है। वास्तव में विद्यालय शिक्षा की गुणवत्ता व सक्षमता का उच्च स्तर सुनिश्चित करने के लिए यह एक अनिवार्य शर्त है। अन्य शब्दों में कहें तो विद्यालय शिक्षा को प्रभावशाली बनाने के लिए अध्यापक शिक्षा को प्रभावशाली बनाना बेहद जरूरी है।

अध्यापक, विद्यार्थियों के जीवन में सुधार करने वाले महत्वपूर्ण कारक हो सकते हैं और विकासोन्मुख शिक्षा की प्रक्रिया में उल्लेखनीय भूमिका निभा सकते हैं । अध्यापक यदि अपने काम में दक्ष व प्रतिबद्ध है और यदि वे कक्षा, विद्यालय व समुदाय में अपनी सही भूमिका के निर्वाह में पेशेवर ढंग से सक्षम हैं तो वे सकारात्मक प्रभाव की एक श्रृंखला–प्रक्रिया की शुरूआत कर सकते हैं।

प्रतिबद्धता

किसी भी क्षेत्र में कामकाज का व्यवसायिक अंदाज, उस क्षेत्र में सक्रिय लोगों की प्रतिबद्धता पर निर्भर होता है। अध्यापन भी एक पेशा है इसलिए प्रत्येक अध्यापक के लिए इस पेशे के प्रति प्रतिबद्ध होना आवश्यक है। वर्तमान परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए अध्यापक की प्रतिबद्धता को स्वयंसिद्ध नहीं माना जा सकता। इसलिए प्रतिबद्धता के प्रमुख क्षेत्रों, अध्यापक के अपेक्षित व्यवहार व सेवा–पूर्व और सेवाकालीन अध्यापक शिक्षण के पाठ्यक्रम पर पर्याप्त ध्यान दिया जाना चाहिए। अध्यापक के लिए प्रतिबद्धता के कुछ सर्वाधिक महत्वपूर्ण क्षेत्र इस प्रकार हैं।

विद्यार्थी के प्रति प्रतिबद्धता

अध्यापक के पेशे का चयन करने के साथ ही अध्यापक विद्यार्थियों की तरक्की व चतुर्मुखी विकास के लिए प्रयत्न करने का संकल्प लेता है। अध्यापक ऐसा तभी कर सकता है जब उसमें विद्यार्थियों के प्रति सच्चा लगाव व प्रेम हो और वह उनकी गलतियों व शरारतों के प्रति सहिष्णु हो। अध्यापक में इस संकल्प को पूरा करने की लगन होनी चाहिए। योग्यताओं व प्रदर्शन क्षेत्रों के द्वारा अध्यापक की विद्यार्थियों के प्रति प्रतिबद्धता का पता चलने की उम्मीद की जाती है क्योंकि इनका उद्देश्य भी सर्वोत्तम शिक्षण में योगदान करना है।

निश्चित तौर पर विद्यालय व समुदाय के बीच सहजीवी संबंध है। ज्ञानवान व्यक्ति होने के नाते अध्यापक समुदाय को जीवनपर्यंत चलने वाली शिक्षण प्रक्रिया के महत्व से परिचित करा सकते हैं और उसे इस प्रक्रिया में भाग लेने के लिए प्रेरित भी कर सकते हैं। समाज के वंचित वर्ग को शिक्षा हासिल करने के लिए प्रेरित करने में अध्यापकों की भूमिका

अत्यंत महत्वपूर्ण है। वे इस भूमिका को सार्थक ढंग से तभी निभा सकेंगे जब उनके पास समुदाय की गहरी समझ व उसे प्रेरित करने के तरीकों की पर्याप्त जानकारी होगी।

पेशे के प्रति प्रतिबद्धता

समुदाय ने शिक्षकों को यह महत्वपूर्ण दायित्व सौंपा है कि वे वर्तमान पीढी को शिक्षण और अधिगम की प्रक्रिया के माध्यम से भविष्य के लिए तैयार करें। इस दायित्व के सच्चे निर्वाह के लिए शिक्षण की प्रक्रिया को आनंददायक बनाया जाना चाहिए। सिर्फ प्रतिबद्ध पेशेवर अध्यापक ही अध्यापन की नवीन विधियों का उपयोग करके शिक्षण को प्रभावी बनाने का प्रयास कर सकते हैं। इसके लिए आवश्यक है कि अध्यापक निर्देशित व स्व–शिक्षण की पद्धतियों में सुधार के प्रति पर्याप्त पेशेवर प्रतिबद्धता प्रदर्शित करें तथा व्यवसायिक स्वनिर्देशित अधिगम द्वारा अध्यापकों को प्रेरित करना है जिसकी अभिवृद्धि के लिए अधिक से अधिक अध्यापक अध्यापन व्यवसाय के प्रति प्रतिबद्ध हो सकें।

व्यावसायिक कार्यों हेतु श्रेष्ठता हासिल करने की प्रतिबद्धता

अध्यापन के पेशे के प्रति प्रतिबद्ध अध्यापक को श्रेष्ठता अर्जित करने के प्रति भी प्रतिबद्ध होना चाहिए। अध्यापक को अपने विषय से संबंधित खोजों व परिवर्तनों का ज्ञान होना ही पर्याप्त नहीं है। इन्हें पाठ्यक्रम में शामिल किया जाना चाहिए और अध्यापन के उपयुक्त तरीकों के माध्यम से विद्यार्थी तक संप्रेषित किया जाना चाहिए। अपने पेशे में श्रेष्ठता हासिल करने के लिए नयी–नयी खोजों के सभी पहलुओं का अध्ययन करने के बाद उन्हें स्वीकार करने की तैयारी अनिवार्य है।

बुनियादी मानवीय मूल्यों के प्रति प्रतिबद्धता

मनुष्य इतनी तरक्की इसलिए कर सका है क्योंकि पीढियों के अनुभव से विकसित बुनियादी मूल्यों ने उसका दिशा निर्देशन किया है। बच्चों में इन मूल्यों का अधिष्ठान घर में माँ–बाप व बुजुर्गों द्वारा और विद्यालय में अध्यापकों द्वारा किया जाता है। मूल्यों की शिक्षा आवश्यक होने पर निर्देश देकर और दैनिक जीवन में उन पर अमल करके दी जाती है। अध्यापकों द्वारा सत्य, सौंदर्य, अच्छाई, ईमानदारी, प्रेम, नियमितता, समयबद्धता, निष्पक्षता इत्यादि बुनियादी मूल्यों को अपने व्यवहार में उतारा जाना, बच्चों को इन्हें आत्मसात् करने में स्वयमेव मदद करता है।

अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम में ऊपर बताए गये प्रतिबद्धता क्षेत्रों पर विवेचन किया जाना चाहिए। काफी कुछ इस बात पर भी निर्भर है कि अध्यापक व्यक्तिगत तौर पर अपने जीवन में इन पर किस हद तक अमल करते हैं।

कक्षा में प्रदर्शन

कक्षा में प्रदर्शन के तहत आने वाले प्रमुख क्षेत्र हैं:

(1) निर्देशात्मक/संवादात्मक गतिविधियाँ

(2) कक्षा में होने वाली गतिविधियों का मूल्यांकन

(3) कक्षा प्रबंधन।

सेवारत अध्यापक इन दायित्वों का निर्वाह व्यक्तिगत रूप से अपने–अपने पारंपरिक तौर–तरीकों के द्वारा करते रहे हैं। बहरहाल, दक्षता आधारित अध्यापक शिक्षा के बदलते संदर्भ में उनसे उम्मीद की जाती है कि वे खुद को नये मानदंडों के आधार पर नये सिरे से ढालेंगे। इसके लिए उन्हें दक्षता आधारित शिक्षण पर ध्यान देना होगा। संबंधित समूहों के लिए उपचारात्मक व सुधारात्मक कार्यक्रम विकसित करने होंगे, उपयुक्त प्रबंधन तकनीकियों का इस्तेमाल करना होगा और मूल्यनिष्ठ व्यवहार का व्यक्तिगत उदाहरण प्रस्तुत करना होगा।

विद्यालय–स्तरीय प्रदर्शन

अध्यापकों से अपेक्षा की जाती है कि वे विद्यालय में सुबह प्रार्थना स्थल गतिविधियाँ जैसे प्रार्थना, प्रेरणा गीत, आदर्श वाक्य, राष्ट्रगान, देशभक्ति से सम्बन्धित नारे लगाना आदि के अतिरिक्त खेलकूद, राष्ट्रीय पर्वों, वार्षिक समारोहों इत्यादि का भी नियमित विधि से आयोजन करें। इन गतिविधियों का

मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों को रचनात्मक ढंग से संगठित करके उनमें सही प्रवृत्तियों एवं मूल्यों का विकास करना है। शिक्षकों में ये दायित्व सफलतापूर्वक निभाने के लिए आवश्यक योग्यताएँ विकसित करनी होंगी ताकि वे अध्यापकों व विद्यार्थियों के बीच उपयुक्त संस्कृति का विकास करने और अनुभवजन्य शिक्षण की प्रक्रिया में अधिकतम योगदान कर सकें। अध्यापक के उपयुक्त प्रदर्शन में सामाजिक, सांस्कृतिक, राष्ट्रीय व बुनियादी मूल्यों के संप्रेषण में काफी मदद मिलती है।

विद्यालय से बाहर की गतिविधियों में प्रदर्शन

विद्यालय को चाहिए कि वे शैक्षिक भ्रमण, संग्रहालय, पुस्तकालय व ऐतिहासिक स्थलों की यात्रा और उत्कृष्ट रचनात्मक उपलब्धियों वाले व्यक्तियों से मुलाकात जैसी विभिन्न पाठ्यक्रम संबंधी व पाठ्यक्रम में सहायक गतिविधियों का नियमित रूप से आयोजन करते रहें। अध्यापकों को न सिर्फ इन गतिविधियों का आयोजन करना चाहिए, बल्कि विद्यालय की शिक्षण प्रक्रिया से इन गतिविधियों के समुचित इस्तेमाल के तरीके भी विकसित करने चाहिए। स्वयं की व्यावसायिक तरक्की के लिए उन्हें संगोष्ठियों, कार्यशालाओं, चर्चाओं व अन्य अकादमिक गतिविधियों में भाग लेना चाहिए। इन गतिविधियों में सक्रिय भागीदारी करते हुए इनका यथासंभव लाभ लेना चाहिए। इस तरह प्रत्येक अध्यापक को विद्यालय से बाहर की गतिविधियों में भी उत्कृष्ट प्रदर्शन की क्षमता हासिल करनी चाहिए ताकि वह बदलती परिस्थितियों में भी अपनी दूरदृष्टि, कुशाग्र बुद्धि व विशेषज्ञता के जरिये अपने क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान कर सके। इसके लिए दक्षता आधारित पद्धति के तहत लगातार व नियमित रूप से पुनः अनुकूलन के लिए सेवाकालीन शिक्षण कार्यक्रमों की आवश्यकता होगी।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि यदि अध्यापक शिक्षा के अन्तर्गत उपरोक्त कारकों से छात्र–अध्यापकों को परिचित कराया जाये और भविष्य में इन कारकों को ध्यान मे रखकरं शिक्षण कार्य करने के लिये प्रेरित किया जाए तब यह अध्यापक शिक्षा में गुणवत्ता कि ओर एक प्रयास हो सकेगा।

संदर्भ ग्रन्थ :

1. **गुणात्मक विद्यालय शिक्षा हेतु दक्षता आधारित व प्रतिबद्धता उन्मुख अध्यापक शिक्षा,** 1998, राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद।
2. Education for Values in Schools: A Framework, 2012, NCERT.
3. Vision of Teacher Education in India Quality and Regulatory Perspective,
4. Report of the High-Powered Commission on Teacher Education Constituted by the Hon'ble Supreme Court of India, Aug 2012.